विश्व पुस्तक दिवस पर ऑनलाइन परिसंवाद

'भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका'

आलोकपर्व नेटवर्क

साहित्य अकादेमी द्वारा विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव को रेखांकित करते हुए 'भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका' विषयक परिसंवाद का आयोजन 'वेबलाइन साहित्य शृंखला' के अंतर्गत ऑनलाइन किया गया, जो यूट्यूब के माध्यम से सीधा प्रसारित हुआ।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात कन्नड कथाकार एस. एल. भैरप्पा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के वक्तव्यों की पुस्तक ने भारतीयों को भारतीय संस्कृति की जड़ों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने बंकिमचंद्र, रवींद्रनाथ ठाकुर, आनंद कुमारस्वामी, सुब्रह्मण्यम भारती आदि लेखकों की रचनाओं को संदर्भित करते हुए स्वतंत्रता आंदोलन पर उनके प्रभाव को रेखांकित किया। उन्होंने इतिहासकारों की भूमिका को भी महत्त्वपूर्ण माना। उन्होंने लेखक-प्रकाशक संबंधों पर चर्चा करते हुए वर्तमान प्रकाशन जगत द्वारा नैतिक मूल्यों के अनुपालन की जरूरत पर बल दिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अलावा भी भारत में दो महत्त्वपूर्ण आंदोलन रहे हैं, जिन्हें रेखांकित करने की जरूरत है। एक है, भक्ति आंदोलन तथा दूसरा पुस्तक-प्रकाशन। उन्होंने मानव जीवन में पुस्तकों के महत्त्व और भूमिका को रेखांकित करते हुए पुस्तकों के बदलते स्वरूप की चर्चा भी की।

कार्यक्रम के आरंभ में सभी वक्ताओं और दर्शकों का औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किताबों के महत्त्व और भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि यह माना जाता है कि किताबों ने अनेक क्रांतियों को जन्म दिया है, लेकिन भारतीय संदर्भों में किताबों ने सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा दी है। साथ ही स्वतंत्रता संग्राम में भी किताबों की भूमिका असंदिग्ध है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने बंकिमचंद्र कृत 'आनंदमठ', वैष्णवीशरण गुप्त कृत 'भारतभारती' तथा सुब्रह्मण्यम भारती, रवींद्रनाथ ठाकुर, रामधारी सिंह दिनकर, प्रेमचंद आदि लेखकों की रचनाओं को संदर्भित किया। उन्होंने महात्मा गाँधी के वक्तव्यों, लेखन और पत्रकारिता के प्रभाव को भी रेखांकित किया, जिनकी प्रेरणा से आंदोलनधर्मी साहित्य का व्यापक लेखन विभिन्न भाषाओं में हुआ।

परिसंवाद का आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए अकादेमी में कन्नड भाषा परामर्श मंडल के

संयोजक कन्नड लेखक सिद्धलिंगैया ने उन्नीसवीं सदी के आरंभ से लेकर कन्नड साहित्य के विभिन्न लेखकों का नामोल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं के प्रभाव और प्रेरणा की चर्चा की। साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं और बोलियों में लिखित साहित्य और उसके लेखकों को भी संदर्भित किया।

प्रतिष्ठित हिंदी पत्रकार एवं लेखक कन्हैयालाल शर्मा ने लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की मराठी पुस्तक 'गीता रहस्य' को संदर्भित किया। उन्होंने कहा कि जब इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद माधवराव सप्रे द्वारा किया गया और वह हिंदी संसार तक पहुँचा तो इसने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का काम किया। उन्होंने सावरकर कृत '1857 भारत का प्रथम स्वातंत्र्य समर' की भूमिका को भी रेखांकित किया। माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा' सामक कविता सहित उन्होंने अन्य लेखकों को भी उध्दृत किया।

तमिल लेखक एवं पत्रकार मालन गाँधी-पूर्व तथा उनके पश्चात की भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के परिदृश्य को उपस्थित करते हुए सुब्रह्मण्यम भारती की विभिन्न रचनाओं की चर्चा की तथा उनके प्रभाव को रेखांकित किया। मलयालम लेखक पॉल जकारिया ने कहा कि पुस्तकें परिवर्तन के लिए प्रेरणा देती हैं तथा स्वतंत्रता आंदोलन परिवर्तन के लिए था। इसलिए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी पुस्तकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं के योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया। साथ ही वल्लत्तोल, नारायण मेनन, श्रीनारायण, केसरी बालकृष्णन आदि की रचनाओं को भी उध्दृत किया।

संस्कृत एवं कन्नड लेखिका एस. आर. लीला ने व्यासकृत 'श्रीमद्भगवद्गीता', सावरकर कृत '1857 इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस' तथा भीमराव अंबेडकर कृत 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' का उल्लेख करते हुए कहा इन पुस्तकों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक रूप से प्रेरित और प्रभावित किया। उन्होंने भगवद्गीता से प्रेरणा प्राप्त करनेवाले बहुत-से क्रांतिकारियों के नामों का उल्लेख भी किया।

अंग्रेजी कथयित्री एवं आलोचक संचका दासगुप्ता ने रवींद्रनाथ ठाकुर की काव्यकृति 'स्वदेश', उपन्यास 'गोरा' तथा राष्ट्रवाद विषयक उनके निबंध को संदर्भित करते हुए अपने विचार रखे। मराठी कवि, कथाकार एवं आलोचक शरण कुमार लिंबाले ने कहा कि किताबें नहीं होतीं तो आज का समाज अपने वर्तमान स्वरूप में नहीं होता। वास्तव में किताबें आजाद मन की निर्मिति होती हैं। किताबों ने न केवल अनेक क्रांतियों को जन्म दिया है, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को भी प्रेरित और प्रभावित किया है। लेकिन मैं भारत के संविधान को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानता हूँ, जो मनुष्य, मानवता और लोकतंत्र को बचाए रखने की व्यवस्था देता है।

गुजराती के प्रतिष्ठित कवि सितांशु यशश्चंद्र ने गुजराती की तीन कृतियों को संदर्भित करते हुए अपने विचार रखे। उन्होंने नर्मद कृत 'राज्यरंग', गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी कृत 'सरस्वतीचंद्र' (चार खंडों में उपन्यास) तथा महात्मा गाँधी कृत 'हिंद स्वराज' का उल्लेख किया।

कार्यक्रम का संयोजन करते हुए अंत में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ परिसंवाद का अंत हुआ।